आर्योदय

ARYODAYE

Read Aryodaye on line -- www.aryasabhamauritius.mu

Weekly Aryodaye No. 375 ARYA SABHA MAURITIUS *12th Sept. to 19th Sept. 2017*

Arya Bhawan, 1 Maharshi Dayanand St., Port Louis, Tel : 2122730, 2087504, Fax : 2103778, Email ID : aryamu@intnet.mu

LET US LOOK AT EVERYONE WITH A FRIENDLY EYE

- VEDA

ओ३म् प्रतीची दिग्वरुणोऽधिपतिः पृदाकू रक्षितान्नमिषवः।
तेभ्यो नमोऽधिपतिभ्यो नमो रक्षितृभ्यो नम इषुभ्यो नम एभ्यो अस्तु।
योऽस्मान् द्वेष्टि यं वयं द्विष्मस्तं वो जम्भे दध्मः ।।

अथर्व० ३/२७/३

भावार्थ – *पश्चिम दिशा में वरुण सबसे उत्तम परमेश्वर सबका राजा है। वह बड़े-बड़े अजगर, सर्पादि विषधर प्राणियों से रक्षा करने वाला है। पृथिव्यादि पदार्थ उसके बाण के सदृश हैं अर्थात् श्रेष्ठों की रक्षा और दुष्टों की ताड़ना के निमित्त हैं। उन सबके ...... इत्यादि पूर्ववत् ।।*

(सार्वदेशिक धर्मार्य सभा)

Om Pratīcī Dig-varuno-Adhipatih Pridākū Rakşitā Annam Ishavah. Tebhyo Namo-Adhipatibhyo Namo Rakshitribhyo Nama Ishubhyo Nama Ebhyo-Astu. Yo-Asman Dveshti Yam Vayam Dvishmastam vo Jambhe Dadmah.

Meaning of Words :-- **Pratīcī** - the west, **Dik** - direction, **Varunah** - an epithet of God as the highest Lord of the West, **Pridākuh** - Python and other venomous creatures or poisonous plants, **Rakshitā** - protector, **annam** - food, **Ishavah** - (like) arrows.

Purport :-- *God Varuna is revered as the Lord of the West. He protects us from all poisonous creatures and plants just as the arrows protect us from our enemies. He also feeds us with nourishing food. We bow to Him and submit all our actions for His judgement.*

Explanation :-- In this mantra, the Supreme God is addressed as 'Varuna' -- a word which has many connotations. Here, it means the Lord of the West. While performing 'Sandhya' we feel His presence in all directions. He is the saviour who protects us from our enemies.

Dr O.N. Gangoo

वैदिक विवाह

डॉ० उदय नारायण गंगू,ओ.एस.के,जी.ओ.एस.के.,आर्य रत्न

मॉरीशस में आर्यसमाज की स्थापना के पश्चात् आर्य विद्वानों ने इस धरती पर वैदिक धर्म का प्रचार-प्रसार प्रारम्भ किया। प्रारम्भिक काल के आर्यसमाजी पंडितों ने पौराणिक कर्मकाण्ड के अन्तर्गत होने वाली अनेक अनर्गल विधियों की निरर्थकता सिद्ध करके ऋषि दयानन्द द्वारा 'संस्कारविधि' में उल्लिखित सोलह संस्कारों पर प्रकाश डाला। परिणामस्वरूप अन्य संस्कारों के साथ ही इस देश में 'वैदिक विवाह' का खूब प्रचलन हुआ।

वैदिक धर्म के प्रचारकों को अपने क्रान्तिकारी प्रचार-कार्यों के कारण पुरानतन पंथी हिन्दू समाज के अपमान का प्याला पीना पड़ा। इस सन्दर्भ में पंडित आत्माराम विश्वनाथ एक उदाहरण प्रस्तुत करते हैं – 'भरी मजलिस में उसकी दिल्लगी उड़ाते थे।' उदाहरण के तौर पर ठठ्ठा के एक प्रकार का हम यहाँ उल्लेख करते हैं। रोज़हिल में पंजाबी वार्डर सहीराम का एक धोबी की कन्या के साथ आर्यसमाज की पद्धति से विवाह हुआ । सिपाहियों की बरियात में किसकी मजाल थी कि कोई उपद्रव मचावे। परन्तु विवाह ने भारी हलचल मचा दी। लोग तो कुछ नहीं कर सके, पर आर्यसमाजियों की हँसी करके वह अपना दिल ठण्डा कर लेते थे। उन दिनों नचनियों के नाच की प्रथा ज़ोर में थी। उक्त विवाह पर एक गाना बनाकर मजलिस को खूब हँसा देते थे । गाना यह है –

'सुन भाई अरिया कैसन पंथ निकल लेबा,
छत्री के बेटा धोबी की बेटी, दोनों के सादी करव लेबा।
जूता पहनके चौका में जाके कुय्येर से होम करव लेबा,
सुन भाई अरिया ।'

(हिन्दू मोरिशस पृ० ३३६-३३७ प्रथम संस्करण १९३६)

यह बड़ी प्रसन्नता का विषय है कि हमारे देश में आज भी कुछ ऐसे श्रद्धालु यजमान पाये-जाते हैं, जो महर्षि दयानन्दकृत 'संस्कार विधि' में वर्णित विधियों का पूर्णतया पालन करना अपना परम धर्म समझते हैं, किन्तु वर्तमान में अधिकांश यजमान ऐसे हैं, जो कम समय में ही यज्ञ अथवा किसी संस्कार का सम्पादन करने के लिए पुरोहितों को विवश करते हैं।

यहाँ हमारे पंडित-पंडिताओं का ध्यान एक और बात की ओर आकृष्ट करना समीचीन होगा। विवाह से पूर्व और विवाहोपरान्त कई लोकाचार विधियाँ सम्पन्न की जाती हैं। इनकी उपेक्षा नहीं की जा सकती, क्योंकि लोक समाज में इनका प्रचलन दीर्घकाल से होता आया है, जैसे 'दोमेला', 'परछन विधि' आदि।

हमारा विनम्र निवेदन है कि हमारे आर्य पुरोहित 'विवाह-विधि' को बड़ी श्रद्धापूर्वक सम्पन्न करें, ताकि वैवाहिक जीवन में प्रवेश करने वाले युवक-युवती पर इस धार्मिक संस्कार का अचूक प्रभाव पड़े, उनके जीवन में विवाह-विच्छेद की नौबत कभी न आये।

खेद से कहना पड़ता है कि कई अकुशल पुरोहित इस संस्कार को सम्पन्न करते समय इसकी धार्मिकता की उपेक्षा कर जाते हैं। दूषित संस्कार सम्पन्न करने के कारण विवाह-बन्धन टूट जाता है। इसलिए परमावश्यक है कि इस महान् संस्कार को सम्पन्न करने के लिए योग्य पुरोहित-पुरोहिता का ही वरण किया जाये।

सम्पादकीय

घोटाले का चक्रव्यूह

आज धन कमाने का ज़माना है। धन-दौलत के मोह में मनुष्य व्याकुल है। ईमानदार व्यक्ति कड़ी मेहनत के साथ धन-राशि प्राप्त करके अपने परिवार का पालन-पोषण करते हैं। धर्मयुक्त व्यवहारों से जीवन व्यतीत करके संतुष्ट रहते हैं। अपनी कमाई हुई संपत्ति का सदुपयोग करके आनन्दित रहते हैं।

जीवन व्यतीत करने के लिए धन की अति आवश्यकता होती है, लेकिन धन के लोभ में व्याकुल होना उचित नहीं, क्योंकि एक धन-लोभी कुकर्म की ओर अग्रसर होता रहता है और अनुचित तरीक़े से धनी बनने का उपाय ढूँढ़ता रहता है। उसके चक्रव्यूह में जो फँस जाते हैं, वे बरबाद हो जाते हैं।

यह बड़े ही खेद की बात है कि हमारे देश में कितने धोखेबाज़ पैदा हो रहे हैं। वे तरह-तरह की योजनाएँ बनाकर नादान व्यक्तियों को लूटने में लगे हैं। वे इतनी चालाकी से धोखा देते हैं कि किसी बात की भनक तक नहीं होती है। उनके चक्रव्यूह में फँस जाने के बाद अपनी नादानी पर पश्चात्ताप होता है।

हमारे देश के नागरिकों को ठगने वाले ठगेरे अधिक हैं, जिनकी करतूतों से हम अति दुखी हैं। विज्ञान और नवीन तकनी की क्षेत्र में कंप्यूटर, इंटरनेट, फेसबुक आदि साधनों द्वारा लोगों की सम्पत्ति लूटने वाले बढ़ते जा रहे हैं और असंख्य अबोध जन लूटे जा रहे हैं। वे इतनी होशियारी से भारी रक़म प्राप्त कर लेते हैं कि आदमी अचंभे में पड़ जाते हैं। इसी प्रकार बैंक में रखे हुए रुपये भी निकाले जा रहे हैं। कितने व्यक्ति सूददर का लालच दिखाकर भोले-भाले लोगों की संपत्ति चुरा रहे हैं। कई बेईमान तो नौकरी का लालच दिखाकर कितने बेकारों को हड़प रहे हैं, कुछ ऐसे ठगेरे भी हैं जो हमारे युवक-युवतियों को विदेश में भेजकर अच्छी नौकरी पाने की आशा में उन्हें कंगाल कर रहे हैं। अनगिनत व्यक्ति दुष्ट दलालों के भ्रम-जाल में फँसकर ज़मीन की खरीदारी में अपनी तिजोरी खाली करके तड़प रहे हैं। धनलूलूपत्ता के पीछे कितने लोग गैर कानूनी तरीक़े से रुपये कमा रहे हैं।

भूत-प्रेत का भ्रम दिखाकर हज़ारों रुपये लूटने वाले ओझे भी हैं। कितने नक़ली एजेन्टों की मीठी बातों से प्रभावित होकर कुछ लोग मेहनत की कमाई हुई अपनी संपत्ति व्यर्थ में गवाँ रहे हैं। इसी प्रकार अनेक प्रकार के तरीक़ों से घोटाले पर घोटाला होता जा रहा है। हम सभी पाठकों से माँग करते हैं कि आप अपने परिवारों में इस गम्भीर मुद्दे पर चर्चा करके सचेत करें। अपने बच्चों को किसी टोली के फंदे से दूर रहने के लिए जानकारी दें ताकि उनकी रक्षा हो सके।

घोटाले के चक्रव्यूह में फँसने वाले हमारे जो भाई-बहन आज पीड़ित और चिन्तित हैं, हम उनके प्रति अति दुखी हैं। परमात्मा उन्हें धैर्य और सामर्थ्य प्रदान करे, ताकि उनके दुखद जीवन में प्रकाश की किरणें पुनः दिखाई दें। किसी देश में घोटाले पर घोटाला बढ़ने से उसके नागरिकों पर बुरा असर पड़ता। परिवार की आर्थिक स्थिति दयनीय हो जाती है। समाज के उत्थान में रुकावटें आ जाती हैं और राष्ट्र को क्षति पहुँचती है।

हमारी सरकार की ओर से तो उन घोखेबाज़ों, लूटेरों, ठगेरों, दलालों के रोकथाम में तो पूरी कोशिश जारी हैं। ऐसी गम्भीर परिस्थिति में हम समस्त हिन्दुओं को भी सतर्क रहना चाहिए, ताकि हमारी मेहनत की कमाई हुई सम्पत्ति की रक्षा हो सके।

यह ध्यान रहे कि – ज्ञान का लोभ करना लाभदायक है और धन का लोभ करना हानिकारक होता है ।

बालचन्द तानाकूर

मदन मोहन रामयाद न रहे

सत्यदेव प्रीतम,सी.एस.के.,आर्य रत्न, मंत्री आर्य सभा

दुख के साथ लिखना पड़ रहा है कि २८ अगस्त २०१७ को प्रिंसेस मार्गारेट अस्पताल में मदन मोहन रामयाद ने अंतिम साँस ली। उनकी आयु ९४ वर्ष की थी। कुछ दिन पहले स्वस्थ थे। वे अपने खेत में अनानास लगा रहे थे। खेत ही में गिर गए और माथे पर चोट आयी। होश-हवास उड़ गए। वहीं से अस्पताल ले जाया गया और चन्द ही दिनों के बाद जीवन-लीला समाप्त हो गयी ।

मदन मोहन जी सीता के पति थे। उनका दाम्पत्य जीवन बहुत ही आदर्श था। उनका एक ही पुत्र है, जो डॉक्टर है। सभी ने मिलकर उनकी सुश्रूषा की। मदन-मोहन जी मृदु-भाषी थे। वे जब भी मिलते थे अपने लम्बे जीवन के अनुभवों का ज़िक्र करते रहते थे। वे सावान ज़िले के ऐतिहासिक गाँव सूयाक के रहने वाले थे। बाद में बोनतेर वाक्वा में आकर बस गए और मृत्यु पर्यन्त यहीं रह गए, अपने छोटे परिवार के साथ। उम्र बढ़ने के बावजूद भी वे कभी निष्क्रिय बैठे नहीं रहते। यही उनके स्वास्थ्य का राज़ था।

२८ अगस्त को ही दिन के डेढ़ बजे उनकी अर्थी उठाई गयी और बड़े जन-समूह के साथ वाक्वा फेनिक्स श्मशान-भूमि ले जायी गयी, जहाँ पंडित यश्वन्तलाल चूड़ामणि द्वारा अन्त्येष्टि क्रिया सम्पन्न की गयी। देखते-देखते पंच-भौतिक शरीर राख में बदल गया केवल याद रह गयी ।

श्रावणी एक सुखद-यात्रा

पं० रामसुन्दर शोभन, वाचस्पति

श्रावणी पर्व एक आध्यात्मिक और उल्लास पूर्ण यात्रा है। कई दिनों तक वेद और यज्ञ-प्रेमी इस आध्यात्म यात्रा में अपने को पूर्णरूपेण सम्मिलित कर लेते हैं। ऐसी अनुभूति होती है कि यजमान इसी ताक में रहते हैं, कब यह दिव्य रथ आए और इस पर आरूढ़ होकर शुभ कृत्य को कार्यरूप देते हुए अपने को कल्याण मार्ग के पथिक बनाये।

मैं अनेकों यजमानों के प्रांगण में प्रज्वलित यजकुण्डों की अग्नि से बार-बार तपा हूँ। याज्ञिक परिवार एक सप्ताह पूर्व से ही आयोजन प्रारम्भ कर देते हैं। गृह के पवित्रीकरण में न्यूनता न रह जाये, इसका बड़ा ध्यान रखते हैं। परिवार विचार-विमर्श करके योग्य-विद्वान् पुरोहित का वरण करते हैं। पुरोहित की दैनंदिनी के आधार से शुभ दिन का चयन करते हैं। सात्त्विक और आद्यात्मिक भाव से अतिथि यज्ञ के लिए अपनी परिस्थिति को नाप-तोलकर आमन्त्रित करते हैं। यजमान की भावना यही रहती है कि हमारा यज्ञ सफल हो जाय और इस शुभ कर्म से संसार को सुख पहुँचे। हम सब ईश्वर के कृपापात्र बनें।

यज्ञ की परिस्थिति को नापते हुए यजमान सामान एकत्रित करते हैं। कीड़ा-रहित, मलिनता रहित और सुखी-सुगंधित समिधाएँ छोटी-बड़ी कटवाकर रखते हैं। वातावरण रक्षार्थ चार प्रकार के द्रव्यों को यज्ञ में आहूत करते हैं। पूरे उल्लास से पूर्ण सज-धजकर बच्चे और बड़े लोग तथा माता-बहनें रंगीन साड़ियों में सुशोभित होती हैं। पुरुषगण बड़ी लगन से धोती-कुर्ते को धारण कर यज्ञ को बढ़ाने के लिए बड़ी श्रद्धा और भक्ति के साथ बैठते हैं ।

ऐसे भी यज्ञ प्रेमी हैं, जो वर्षों से विदेशी हो गये हैं। परन्तु वेद-मन्त्रों और यज्ञ से अभी भी देशी ही हैं। स्वदेश और परिवार की स्मृति जब विस्मित कर देती है, तब एकाएक वापस लौट नहीं आते। श्रावण मास की प्रतीक्षा करके श्रावणी में आते हैं। पूर्ण भक्ति और श्रद्धा से ओत-प्रोत होकर परिवार सहित श्रावणी यज्ञ सम्पन्न करते हैं और अपने को बड़ा ही भाग्यशाली मानते हैं।

मुझे यह आभास हुआ है कि यज्ञ प्रेमियों और श्रद्धालु भक्तों की अन्तर-गुहा में जिज्ञासा की अग्नि सुलगती रहती है। जानने की लालसा में भक्तगण आँखें बिछाए रहते हैं कि कब ज्ञान का छोटा बुंदा टपक जाय और जीवन की मरुभूमि ज्ञानामृत का सरोवर बन जाये। ज्ञान-पिपासा कभी-कभी अज्ञानता के घने वन में समा जाते हैं। अज्ञान मार्ग में स्वार्थी गुरु के चरण-स्पर्श कर लेते हैं। जो परमार्थ का मार्ग न दिखाकर स्वार्थ और अज्ञानता के गर्त में डुबो देते हैं।

आध्यात्म यात्रा में श्रावणी उपाकर्म वेद और यज्ञ प्रेमियों का स्वर्णावसर होता है। इसी यज्ञाग्नि की दीप्ति मानव-समाज को दीप्तिमान् बनाती है और सफल जीवन का मार्ग प्रशस्त करती है।

आर्यों के पितर

पंडित राजमन रामसाहा, आर्य भूषण

आर्य विचार-धारा है कि सृष्टि के आदि में धरती पर ज्ञानीगण अवतरित हुए थे। वे असाधारण ज्ञानी थे। वे वेद प्रकट करने वाले और श्रुति-श्रवण करके मन्त्रों के सही अर्थ जानने वाले थे। धरती पर पहली बार सृष्टि के आरम्भ में सभी आए हुए जवान थे। यजुर्वेद कहता है **(तं यज्ञं बर्हिषि प्रौक्षन् पुरुषं जातमग्रतः ।। तेन देवाऽअयजन्त साध्याऽऋषयश्च ये।)** मानव - सृष्टि के आरम्भ में आए हुए वे (देवाः विद्वान् गण धरती रूपी बर्हिषी अर्थात् कुण्ड में अपनी साधना से उस यज्ञ स्वरूप परमात्मा को सींचकर मन्त्रार्थ जानने वाले ऋषि हुए। अतः प्रथम जितने लोग आए थे। वे ही लोग हम मनुष्य के पितर हुए हैं, जब पितरों की पूजा की बात आती है तब वे ही प्रथम आए हुए, विद्वान् पितरों की स्मृति में आते हैं।

तभी तो हम वेद मन्त्र से उन्हीं लोगों को अपना देवता और विद्वान्-पितर होना स्वीकारते हैं। फिर उन्हीं लोगों जैसे ज्ञानी होने के लिए प्रार्थना भी करते हैं। हम ज्ञान की याचना करते हैं **(यां मेधां देव गणाः पितरश्चोपासते। तया मामद्य मेधया मेधाविनं कुरु।)** जिस वेद ज्ञान को हमारे विद्वान् पितर गण प्राप्त करके आप परमात्मा को मानते थे। हे परमात्मन ! आज उस मेधा शक्ति से मुझे मेधावी बना दे।

धरती पर परमात्मा की ओर से बिन माता के प्रकट होने वाले प्रथम आए लोगों को ही पितर होने का श्रेय प्राप्त है। हमारे शरीर के जन्म देने वाले माता-पिता जब तक जीते हैं। उनका हम आदर और सेवा-सत्कार करते हैं। हम उनसे एक जन्मा रहते हैं। जिस पितर से हम द्विज बनते हैं, उन्हें हम अपने जीवन भर देव-यज्ञ से सम्मानित करते रहते हैं। वे देव पुरुष ही हमें पढ़ा-लिखा कर ज्ञान देकर दूसरा जन्म देते हैं। हम अपने पितर को मूर्ख और अनार्य नहीं मानते। जो हमें द्विज अर्थात् दूसरा जन्म देते हैं, वे ज्ञानी पितर हैं। वर्तमान के वैदिक धर्मियों के पितर तो स्वामी दयानन्द सरस्वती जी महाराज हुए हैं। हम जिस ज्ञान के मिलने से द्विज बने अर्थात् हमारा दूसरा जन्म हुआ। वे हमारे पितर हैं, इस युग में स्वामी विरजानन्द जी, स्वामी दयानन्द जी, स्वामी श्रद्धानन्द जी, आदि-आदि ज्ञानी जन ही हमारे पितर हैं। हम उन्हीं के कथनों को शिरोधार्य करके जीना पसन्द करते हैं। उन्हीं के दिए ज्ञान से हमारा जीवन संचालित है।

हम एक जन्मा होने से आर्य नहीं है। हम द्विजन्मा होने पर आर्य हैं। एक जन्मा तो शूद्र होते हैं। हम शूद्र तव को आर्य बनने का एक सोपान मानते हैं, जिन ज्ञानी पितर से जन्म लेकर हम द्विजन्मा बन जाते हैं, उन देव पितरों ही के लिए देव यज्ञ करते हैं। उन देवों के लिए श्राद्ध करने की आवश्यकता नहीं रहती है। कारण उन लोगों के लिए देव-यज्ञ हर समय होते रहते हैं। धरती पर जन्मे सभी बच्चों को ज्ञान से दोबारा जन्म लेना, इस युग में अति आवश्यक है। उपलब्ध ज्ञान के प्रमाण-पत्रों के आधार पर विद्वानों को काम तक मिलते हैं। आज किसी काम के योग्य बनने के लिए द्विज बनने की आवश्यकता है।

पर द्विज का प्रमाण केवल कागज़ के टुकड़े नहीं होते, कागज़ के टुकड़े तो विषय और अक्षर ज्ञानी का प्रमाण है। सुचरित्र और शुद्ध सोच रखने पर ही आर्यत्व की पहचान बनती है। शुद्ध विचार और सद्चरित्र से स्वामी दयानन्द के वंशज कहलाते हैं। उनके साहित्य को अध्ययन करके अनुकूल जीवन बिताने से आप भी विद्वान् बन चुके हैं। धरती पर अच्छे आर्य के पितर मूर्ख हो ही नहीं सकते। सभी द्विजन्मा ही आर्य हो सकते हैं। आपके शरीर को जन्म देने वाले पितर की अन्त्येष्टि के बाद श्राद्ध करना ही नहीं चाहिए, पर आपको द्विज बनाने वाले ज्ञानी पितर के लिए हमेशा देव यज्ञ करते रहना .... देव यज्ञ करते रहना ही पितृ-यज्ञ है।

मरे हुओं की स्मृति में यज्ञ करना कोई अनुचित नहीं, पर श्राद्ध नाम से भ्रम को पोसना नहीं है। इसी भ्रम से मरी, बामत, मनुष्य देव के नाम भूत-प्रेत को रोग जगे रहते थे। लोग पीड़ित रहते थे, घर-घर उन्हीं पितरों के नाम बाप या माँ घर के कोने में कपूर जलाते और शराब गिराते थे। अभी भी कुछ लोग ज्ञानी हो जाने पर भी अपने बेटे-बेटियों के विवाह से पहले घर के कोने में मरे हुओं को कपूर जलाते हैं। इसी भ्रम को हटाने में आर्य प्रचारक पितृ श्राद्ध से दूर रखना चाहते हैं। इस बुरी भावना से दूर रहने से बाल बच्चे, नाती-पोते इस रोग से मुक्त हो पाएँगे, नहीं तो कुल-रीत मानकर उसी रास्ते चलते जाएँगे। जब फल निकलता नहीं देखेंगे तो धर्म ही बदल देंगे। हम भटकों पर देव दयानन्द की कृपा पड़ी हम अन्धों को आँखें मिल सकीं । प्रयत्न करते रहना चाहिए कि हमारी आँखें फिर से बन्द न हो जायें ।

नवमानव-निर्माण

पंडित कविराज खेदू, वाचस्पति

हर्ष के साथ सूचित किया जाता है कि प्लेन विल्येम्स ज़िले में संस्कारों को लेकर स्थान-स्थान पर प्रचार हो रहा है। पंडिता राजवंश सोलिक, वाचस्पति जी कुछ महिलाओं के सहयोग से घर-घर जाकर गर्भवती नारियों के साथ साप्ताहिक सत्संग तथा पुंसवन और सीमन्तोन्नयन संस्कार करके उनकी विशेषताओं के बारे में समझाने में लगी हुई हैं। इस महायज्ञ में हेर्मिताज़ आर्यसमाज से श्रीमती श्रद्धा बन्धन जी हैं, सोल्फ़ेरिनो आर्यसमाज से श्रीमती सरोज रामलखन जी और कैंज़ कॉतों आर्यसमाज से श्रीमती इन्दिरा घरबरन जी हैं, जो तन,मन,धन से श्रद्धापूर्वक भाग ले रही हैं। इस महान् कार्य को करने से शिशु तथा माता दोनों को ज्ञान दिया जा रहा है ।

क्या हम मानव हैं ?

यह विचारनीय प्रश्न है, जो आचार्य अशीष जी द्वारा शिविरार्थियों से पूछा गया। सूल्याक आर्यसमाज में आयोजित तीन दिनों के योग प्रशिक्षण शिविर जो २५ से २७ में लगी संतुष्टजनक और सफलतापूर्वक पूर्ण हुआ। उपर्युक्त प्रश्न के उत्तर में ब्रह्माश्रम गुरुकुल के छात्र अभय खेदू आर्य ने मनु महाराज के श्लोक – **'धृतिक्षमादमोऽस्तेयं शौचं इंद्रिय निग्रह धी विद्या सत्यं अक्रोधो धर्मं दसकं लक्षणम्'** – तुरन्त हीं सुना दिया। इस श्लोक को समर्थन करते हुए आचार्य अशीष जी ने धर्म के दस लक्षणों पर प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि धृति, क्षमा, दम, अस्तेय, शौच, इंद्रिय-निग्रह, धी, विद्या, सत्य और अक्रोध ये लक्षण केवल हिन्दू या हम आर्यों के लिए नहीं है, अपितु पूरे मानव वर्ग के लिए है। जो भी इन लक्षणों पर आचरण करते हैं, वे ही धार्मिक तथा मानव कहलाते हैं और जिनमें ये लक्षण नहीं पाए जाते हैं, वे मनुष्य शरीर धारण करने पर भी मानव कोटि में नहीं आते।

शिविर का उद्देश्य यही था कि मानव को उनके लक्ष्य की जानकारी दी जाए, यानी कि परमात्मा की अनुभूति कैसे की जाए।

EVENT: 90th Anniversary of Trefles Arya Samaj

The Trefles Arya Samaj and the Arya Mahila Samaj of Plaines Wilhems District are celebrating the 90th Anniversary of their Samaj on Sunday 24th September, 2017 from 2.00pm to 5.00 pm. In this context, a series of activities comprising Yaj, talks, Sandesh, Bhajans and Power Point Presentation has been organised from Monday 18th September from 5 pm to 6.30 pm to mark this important event. Our warmest congratulations and blessings to the President, Mr.Sonalall Ramdoss and all members of the Trefles AS and AMS for their dedications to carry forward the hard works and visions of the elders and founder members of the Samaj in the disseminations of the teachings of the Vedas and tribute paid to Maharishi Dayanand Saraswati.

A cordial invitation to all.

President and Members of Plaines Wilhems Arya Zila Parishad

संस्कारों का महत्त्व

पंडिता राजवंश सॉलिक, वाचस्पति

संस्कार का अर्थ है – शुद्धता और पवित्रता से किया हुआ कर्म, जिससे मानव का नवनिर्माण हो, उसके मन और आत्मा उत्तम हो। जिस प्रकार आग की भट्टी से निकलने के बाद ही सोना अपने स्वरूप को प्राप्त करता है और अपनी चमक से लोगों का मन मोहकर उन्हें अपनी ओर अकर्षित करता है, उसी प्रकार मनुष्य को भी सोलह संस्कारों की भट्टी से गुज़रना पड़ता है तब कहीं जाकर उसमें श्रेष्ठ गुणों का निखार होता है।

महर्षि दयानन्द जी ने मनुष्य के जन्म से पहले तीन संस्कारों को करने का निर्देश किया है– गर्भाधान, पुंसवन और सीमन्तोन्नयन। गर्भाधान संस्कार के द्वारा एक नई आत्मा के स्वागत की तैयारी होती है। गर्भ ठहरने के पश्चात् आत्मा को स्थित करने के लिए शरीर का निर्माण आरम्भ हो जाता है। उसका विकास अच्छी तरह से हो, इसके लिए तीसरे महीने में नियमानुसार जो संस्कार किया जाता है, उसे पुंसवन संस्कार कहा जाता है। उस समय गर्भ में पल रही सन्तान के तन-मन की सुरक्षा की ओर माता का पूरा ध्यान आकर्षित कराया जाता है, जिससे वह शरीर और मन से पूरी सावधानी बरते।

तीसरा सीमन्तोन्नयन संस्कार है, जो चौथे, छठे या आठवें महीने में सन्तान के मानसिक विकास के लिए किया जाता है। यह उचित समय है, क्योंकि इस समय सन्तान के मस्तिष्क के कोषों (Cells) का निर्माण होता है। पाँचवें महीने में मन, छठे में बुद्धि और सातवें महीने में अंग-प्रत्यंग का विकास होता है। उस समय माता का उचित वा अनुचित व्यवहार सन्तान पर बहुत प्रभाव डालता है। सन्तान पर सुप्रभाव पड़े, इसके लिए विशेष सावधानियों की आवश्यकता होती है, अर्थात् खान-पान और रहन-सहन आदि का ध्यान रखा जाता है।

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने वेदों के आधार पर संस्कारों को करने का निर्देश दिया है। आधुनिक युग में संस्कारों की सही जानकारी प्राप्त न होने के कारण समाज में दुष्प्रभाव बढ़ता जा रहा है। उसको दूर करने और सही दिशा देने के लिए गर्भवती महिलाओं और भावी माताओं को इन संस्कारों के महत्व के विषय में अवगत करना अत्यन्त आवश्यक है। इसका प्रत्यक्ष रूप से अनुभव कराने के लिए हमारा एक छोटा सा प्रयत्न हो रहा है। इस शुभ कार्य केलिए हमें पं० कविराज खेदू, प्लैन विलियेम्स ज़िले के अधिकारियों और कुछ बहनों का पूरा सहयोग प्राप्त हो रहा है। कुछ महीने पूर्व हमने दो महिलाओं का पुंसवन संस्कार और सिप्तम्बर महीने की पहली और तीसरी तारीख को सीमन्तोन्नयन संस्कार भी किया। इससे एक आशा जगी है कि अधिक से अधिक परिवार इन संस्कारों से प्रभावित होंगे। वैसे तो अनेक पुरोहित-पुरोहिताएँ इन संस्कारों को सम्पन्न करते हैं और हमने भी कई परिवारों में इन संस्कारों को किया है। परन्तु अधिक-से-अधिक लोगों पर इसका सुप्रभाव पड़े और गर्भ ठहराव के बाद से नहीं, अपितु गर्भाधान संस्कार से ही इसका सही और उचित आरम्भ हो, इसलिए इसका सही मार्गदर्शन हो, ऐसा प्रयत्न अनिवार्य है। अज्ञानता के कारण लोग गर्भाधान संस्कार को उतना महत्त्व नहीं देते हैं, जबकि यही सभी संस्कारों का मूल है ।

देश के उत्तर प्रान्त में पूर्णाहुति

बिसनुदेव बिसेसर

जिस प्रकार भारत के उत्तर प्रान्त को 'देव भूमि' कहा जाता है। उसी प्रकार मोरिशस के उत्तर प्रान्त को 'यज्ञ भूमि' कहना अतिशयोक्ति नहीं होगी, क्योंकि चाहे त्रिओले हो या गुडलेन्स यहीं पर श्रावणी यज्ञ का घर-घर करना शुभारम्भ हुआ था।

यदि आर्य सभा मोरिशस की ओर से त्रिओले में पचास वर्ष पहले इस यज्ञ का आयोजन नहीं होता, तो आज २५ वर्षों से यह यज्ञ घर-घर नहीं होता। 'ओ३म्' का झण्डा घर की छतों पर न फहराता। आज केवल रिव्येर जी राँपार में पचास से ज़्यादा आर्यसमाज की शाखाएँ हैं, जहाँ पर कम-से-कम २० घरों में यज्ञ हुआ होगा। कुल मिलाकर एक हज़ार यज्ञ हुआ है। बाक़ी कई अन्य समाजों में, मंदिरों में यज्ञ हुआ है। इससे हमारा प्रान्त अवश्य पवित्र हुआ है। यही वह प्रान्त है, जहाँ के एक गाँव में एक मास तक मैखाना बन्द रहा क्योंकि प्रतिदिन यज्ञ, भजन, भोजन, प्रवचन चलता रहा। दूसरी बात एक सदस्य के घर परिवार में एक मास तक हर शाम को यज्ञ चलता रहा। यह यज्ञ की सुगंध और झण्डा देखकर विधर्मी उस आँगन में घूसते ही नहीं है।

धन्य है ! महर्षि दयानन्द और आर्य सभा मोरिशस के अधिकारीगण जिनकी कृपा और सहयोग से एवं मीडिया की ओर से यह वेद प्रचार चलता रहा और आगे चलकर इस पर्व में और निखार आएगा। चाहे इस परिषद् में पूर्णाहुति किसी कारणवश और कुछ दिनों में होगी क्योंकि आज तक यज्ञ का कार्यक्रम चलता ही रहा है। हमारे वरिष्ठ पुरोहित पं० धर्मेन्द्र रिकाई जी कुछ अस्वस्थ होने के कारण आचार्य सुदेश बदरी जी और कई पंडित-पंडिता वर्ग के लोग बड़ी धूम-धाम से यज्ञ, भजन, संध्या, प्रवचन आदि का आयोजन करते आ रहे हैं – जैसे सें फ्राँस्वा, ग्राँबे, पितों, पेचित राफ़े, त्रिआंग गुडलेन्स, पुद्र दोर आदि, जहाँ पर डॉ० उदयनारायण गंगू जी सभा प्रधान, महामन्त्री जी सत्यदेव प्रीतम जी, श्रीमती सती रामफल जी, श्री बिसनुदेव बिसेसर जी, डॉ० इन्द्रदेव भोला इन्द्रनाथ जी तथा परिषद् के कई महानुभाव अपनी उपस्थिति देते रहे, सभी का उत्साह बढ़ाते रहे और अपनी वैदिक-वाणी से वेद मन्त्रों के वेद ज्ञान की चर्चा करते रहे। ऐसी पूर्णाशा है कि अगले वर्ष इससे ज़्यादा प्रबंध किया जाएगा। आचार्य जीतेन्द्र पुरुषार्थी के अलावा और कई जवान विद्वान् और विदुषी इस मास में आकर हमें और कल्याण का मार्गदर्शन करेंगे। सभी के घरों में वेद की ज्योति जलाएँगे और मन्त्रों की धुन से पूरे देश को तपोवन बानायेंगे।

वैदिक केन्द्र में दैनिक-यज्ञ

पं० रामसुन्दर शोभन, वाचस्पति

'श्रीमती गोविन्द्रामेण आश्रम' में नवनिर्मित एक सुन्दर यज्ञशाला है, जिसका हाल ही में आर्य सभा मॉरीशस द्वारा नामकरण हुआ। आर्यसभा के भूतपूर्व अन्तरंग सदस्य कर्मठ सेवक स्वर्गीय श्री राजेन्द्रचन्द मोहित जी लम्बे काल तक सभा की सेवा करते रहे। उनको स्मृति में रखकर उनकी सेवाओं के लिए कृतज्ञता प्रकट करने के लिए यज्ञशाला को उनका नाम दिया गया – 'श्री राजेन्द्रचन्द मोहित वैदिक केन्द्र।'

इस सुन्दर भवन को पवित्र और आध्यात्मिक बनाये रखने के लिए दैनिक-यज्ञ हो, ऐसी पवित्र भावना की अग्नि श्री सेल्वम् गोविन्द्रामेण, जो आश्रम के वर्तमान् प्रबन्धक हैं, उनकी शुद्धात्मा में जगी, जो परमात्मा की ओर से प्रेरित है। इस अनमोल विचार को ग्राँपोर आर्य ज़िला समिति के समक्ष प्रस्तुत किया गया। तत्काल ही ईश-कृपा से उस अनमोल विचार को कार्यरूप दे दिया गया।

यज्ञ-कर्म को सम्पन्न करने के लिए पंडित-पंडिताओं ने कमर कस ली। प्रत्येक पंडित-पंडिता अपना-अपना दिन निश्चित करके कार्यक्षेत्र में उतर आये। प्रतिदिन वैदिक केन्द्र में यज्ञ-कर्म सम्पन्न हो रहा है। यज्ञ में आश्रम के आश्रित शुद्ध और पवित्रात्माएँ भाग लेती हैं। अपने-अपने सामथ्यानुसार युग्म करों को जोड़े और वाणी से स्वाहाकार करते हुए यज्ञ को सम्पन्न होने में पूर्ण योगदान देते हैं। इस यज्ञ के माध्यम से आश्रितगण प्रार्थना करते हैं – वयं विश्वानीं सुमनसः स्याम – हे प्रभो ! हम लोग सदा प्रसन्नचित्त रहें।

और क्या चाहिए मुझे ?

रामावध राम

पत्थर से निकलकर माटी हो गया ।
मिट्टी से ही हमारी जान।
मैं क्या कहूँ, कहाँ था मैं ! आह, कहाँ आ गया।
मेरा जीवन कोरा कागज़, कोरा ही रह गया।
जो लिखा था, आँसुओं के संग बह गया मेरा जीवन ।

किशोर कुमार जी के इस सुन्दर गीत से धक्का लगा, जो मुझे सही रास्ते पर ले आया ।
आप लोगों को कहानी नहीं, हक़ीक़त सुना रहा हूँ।
मेरी जवानी अंधकार में बीती ,जब से आर्यसमाज का प्रकाश-चमका।
मैं जी रहा हूँ, अच्छा जीवन व्यतीत करता रहा हूँ।

मेहेंदी रंग लाती है, पत्थर से पीसने के बाद ।
आदमी संभलता है तभी, ठोकर खाने के बाद ।।

पत्थर पूजत हरि मिले, तो क्यों न पूजत है पहाड़ ।
इससे भला चक्की मोर भाई, जो पीसत खाए संसार ।।

बस ये दोनों कविताएँ मेरा रंग बदल गयीं ।
धन्य है पंडित विष्णुदयाल, जिन्होंने मुझे सेवा में लगाया ।
मैं उनका सेवक हूँ, अभी तक उन्हीं का गुण गाता हूँ ।
थोड़ी सी सेवा बहुत मेवा –
मैं तो बोलूँगा, तो बोलेंगे कि बोलता हूँ ।
चुप रहूँगा, तो बोलेंगे कि गूँगा हूँ।
शोर करूँगा, तो बोलेंगे कि हुल्लड़बाज़ हूँ।
ये बड़े-पेड़, ये लम्बी डालियाँ, ये सुन्दर और मनमोहक फूल, ये स्वादिष्ट फल।
आओ बच्चो ! फल खाओ, फल खाओ, मगर जड़ को मत भूलो,
बिन जड़ का पेड़ नहीं, फूल-फल नहीं।
अब तुम ही सोचो, कौन-सी जड़ को पकड़ूँ ।

आर्यसमाज की, या मेरे जैसे आधे जीवन वाले की ।
सोच लो बन्धुओ ! सोच लो प्यारो ! अब से मन में सोच लो !

उपदेशामृत

कृष्ण और उसकी बाँसुरी

जयपति पुनीत

योगीराज श्री कृष्ण गोपियों के साथ रास लीला करते थे, जो अपनी बाँसुरी की धून पर सभी को मुग्ध कर लेते थे। यह दिखाया गया है कि उसकी बाँसुरी में इतनी शक्ति थी कि उसकी धून सुनते ही गोपियाँ अपनी सूद-बूद्ध खो बैठती थीं, अपनी सारी ज़िम्मेदारियों को छोड़कर कृष्ण की ओर चल पड़ती थीं। आखीर कृष्ण की बाँसुरी में ऐसी कौन सी शक्ति थी जिसके सुनते ही सभी ओर हलचल मच जाती थी और जो बाँसुरी के पास आते ही स्थिरता को पा लेती थी।

कृष्ण को चरम उत्कर्षता तक पहुँचाना यह महाकवि सूरदास की विशेषता थी। साहित्य में कृष्ण-भक्ति शाखा का विकास प्रायः मुक्तक के रूप में हुआ है। अष्ट छाप के भक्त कवियों को संगीत लहरी में पूरा आनन्द मिलता था। वह संगीत जो मन को आनन्दित कर देता था। भक्ति जो मोक्षानन्द प्रदाता है, वह नीरस कैसे हो सकता है। वही ब्रह्मानन्द जताने वाली कृष्ण की बाँसुरी की धून है।

बंसी का प्रतीकात्मक रूप

कृष्ण की बाँसुरी वह साधन था, जो भक्तरूपी गोपियों को अपनी ओर खींचता था। उस ध्वनि से न केवल मनुष्य ही बल्कि सभी पशु-पक्षी व जड़-चेतन मुग्ध हो जाते थे। इसका अभिप्राय यह है कि

शेष भाग पृष्ठ ४ पर

06.09.2017 @ DAV College, Port Louis

Study Skills by Acharya Ashish Ji

Mrs. Domah, Deputy Rector welcomed all present. She requested the students to be attentive throughout as Acharya Ashish Ji is a person with both a scientific and spiritual background. A former engineer, he is now teaching philosophy and meditation in several countries, motivating people to improve their lifestyles to grow towards happiness, peace and prosperity.

The interactive session between Acharya Ashish Ji and students of DAV College, Port Louis was enriching. Quizzed about the hurdles in the proper conduct of studies the students highlighted lack of focus, due to the following: hunger, drowsiness and laziness; mobile phones, games, television, videos, social networking, electronic gadgets; shopping / dressing / gym; family problems; surrounding sounds / noise from siblings and other sources; household chores; girlfriends and boyfriends.

Acharya Ji's listed the sources of the problem and elaborated on remedial steps which if adopted by students, as personal initiatives, are bound to bring success in their studies and throughout life.

Hunger, drowsiness & laziness

Proper balanced diets eliminate hunger. Meals should be taken in due time. Irregular eating habits or overeating hinders physical growth and focus of teenagers; the first leads to restlessness and the second to sleepiness.

Regular and adequate physical exercise as well as correct sleeping patterns will enable us to keep fit and drive away laziness.

Mobile phones, games, television, videos, social networking & other electronic gadgets

We tend to surrender to these in the name of addiction. Another mental state is that these things pull us towards them.

We simply have to switch off these gadgets, there should be …a time for leisure …a time for serious matters, where our studies should be our main concern. If we do not keep the fire burning from inside us, we shall not be aware of priorities in life, nor have the courage or drive to realise our goals. We simply ignore the fact that lifeless / inert things cannot pull us; rather we go towards them.

Acharya Ji recommended one and all to be addicted to positive things and ideas, and to our goals at the various stages of life …and for students it remains …studies, studies and studies. We need not dwell on the past. The past is history. Learning from our mistakes we need to live the present as well as keep in mind our targets.

Fear of failure will thus have no effect on our self-confidence levels. We need not compare ourselves with others. We simply need to be ourselves; be inspired by people who initially failed but through their efforts became toppers; be positive in our outlook; be aware of how we spend our time; be ever ready to learn and listen to the inner self; and read books that stimulate our mind towards self-assurance, and drive away doubt, anxiety, etc.

A holistic approach includes self-control, the get-up-and-go as a goal oriented person, faith in our own abilities / potential to realise our dreams. Dreaming during sleep leads nowhere. Therefore we need to dream with open eyes and more importantly be attached to such dreams.

Shopping / dressing / gym & family problems

Student life is time to be focused on 'first-things-first.' We need to aware that our mind is our tool for selection. The more focused we are, the closer we shall be our objectives.

Simple living and high thinking, not only as a motto but put into practice since childhood will remain with us over a lifetime. Therefore we should not waste time, the most precious resource as times wasted never comes again. We shall also spare ourselves from superfluous thoughts and stuffs that may clutter our mind and life. We need to be our own self, not imitate others.

Family problems need be addressed by our parents. However, we should not add to their burden or be the source of problems through improper behaviour. The number one goal is to become a good student …an achiever.

Surrounding sounds / noise from siblings & other sources

We should choose to go to peaceful places rather than reacting to such noise. If not, we should understand that the noise are there … we need not to speak to the self in connection with these sounds but speak to the self on what we are doing a present … as we do when we are with our mobiles, playing games, busy with videos, social networking, etc.

We would be able to exercise better control in times of productive activities only when we shut ourselves from such noise.

Household chores

As a responsible person, we need to understand that household tasks are also learning opportunities: to keep our room and clothes tidy; to cook healthy meals, and empower ourselves to be independent, an all-rounder in adulthood.

We need to have a sense of duty towards our parents who are doing so much for us. We need to keep a balance …neither neglect our duties nor act detrimental to our own future. Time management gives you time to be devoted to the family.

Girlfriends & boyfriends

The life of a student is also the growing phase in life, to grow as a physically, mentally and spiritually strong person. Our target should be a holistic development.

The decision making process or choice is best when we possess maturity, knowledge and experience. Physical and mental maturity, the proper knowledge to differentiate between right and wrong and knowledge grows with good nutrition, age and total involvement in the learning process.

At this age, adolescence, we are not so experienced and our knowledge inadequate. Consequently, we will select immature people as the mind is not so mature. We can only find someone to our level. So it is best to wait and not rely solely on physical attraction.

General issues

Acharya Ashish Ji spoke about his personal life experiences where he succeeded without tuitions and he had ample time to help parents, practice sports and healthy leisure activities. Students devoted to their main tasks, studies, always prepare what will be done in class before coming to the class. It improves understanding of the subject; better understanding boosts interest; increased interest expands understanding, focus / concentration and confidence levels. Covering studies in the classroom, not through tuitions gives ample time to other activities; we are no longer under undue pressure; stress levels are reduced to a minimum at manageable levels.

Students should dare to put questions in spite of the fact that we may be treated as 'laughing stock'. Anybody who avoids questions, will not be able to clear our doubts and clarify misunderstandings. A person with inquisitive mind learns at a faster rate, acquires proper knowledge and is bound to become an achiever. Politeness and respect towards teachers, parents, elders as well as those younger than us is also essential to become a good person in life.

Mr. Moher, Rector thanked Aharya Ji for this inspirational session, which would surely leave imprints in the life of the students …the walking is ours. Congratulations Acharya Ji for the delicate dosage in sharing knowledge and life experiences.

Bramdeo Mokoonlall

पृष्ठ ३ का शेष भाग

प्रकृति के सभी जीव-जन्तु प्रभु द्वारा प्राप्त आनन्द के मुहताज हैं। सूरदास ने रहस्यात्मक ढंग से यह समझाया है कि भक्त जब भगवान् की भक्ति को समझ लेता है तो उसे आगे बढ़ने से कोई रोक नहीं सकता, कोई बाधा उसके रास्ते में रोड़ा नहीं डाल सकता। उसके लिए प्रभु की भक्ति से बढ़कर और कोई ज़िम्मेदारी नहीं होती। अतः कृष्ण की बाँसुरी आनन्द का प्रतीक है, वह आनन्द जो शाश्वत और अविनाशी है। जीव को इसका अनुभव एक बार हो जाता है तो वह परमानन्द को पाने के लिए विकल हो जाता है। जब कभी भक्त प्रभु को भूलने लगता है तो कृष्ण की बाँसुरी की धून स्वरूप परमात्मा की नाद उसके अंतःकरण को जगाती है। उसे अपने भुले कर्तव्य की याद दिलाती है। यह आनन्द कृष्ण की बंसी के साथ समाप्त नहीं होता बल्कि यह एक अविरल प्रक्रिया है, जो जीवन पर्यन्त चलता रहता है। समझदार इसका लाभ उठाता है और नासमझ गली-गली भटकता फिरता है।

भक्त और भगवान् का प्रेम

कृष्ण की बाँसुरी में ऐसी दैवी शक्ति थी कि उसकी आवाज़ सुनते ही गोपियाँ अपनी सारी ज़िम्मेदारियाँ भूल जाती थीं। अपना होश खो बैठती थीं। इस दृष्य की कल्पना यह याद दिलाती है कि जहाँ भक्त और भगवान् का संबंध है, वहाँ किसी तीसरी शक्ति का प्रभाव टीक नहीं सकता। बंसी का प्रभाव का रहस्य यह है कि भक्त कितना समर्पित है। वह जब अपने इष्टदेव को पहचान लेता है, तो उसे कोई प्रलोभन दिगा नहीं सकता। उसके सामने उससे बढ़कर और कोई कर्तव्य नहीं हो सकता। यही बात महाकवि सूरदास ने हमें कृष्ण की बाँसुरी के माध्यम से यह संदेश दिया है कि – 'जागो प्रभु तुम्हें जगा रहा है।' संध्या का वक्त है दो घड़ी भगवान् की भक्ति में लगा लो। कुछ देर के लिए सांसारिक गतिविधियों से मुक्त हो जाओ। इसीमें तुम्हारी भलाई है। यही समय तुम्हारा अपना है। बाकी तो संसार के साथ संसार में ही रह जाएगा।

बंसी गोपियाँ और राधा

बंसी की धून वह ब्रह्मनाद है, जिसे योगी जन 'अनाहद' नाद कहते हैं। जब योगी जन ध्यानावस्थित होते हैं, तो अंतःकरण में जिस ध्वनि का आभास होता है, वही 'अनाहद' नाद है, जिससे मन को आनन्द की प्राप्ति होती है। इस नाद में गोपियाँ रूपी लोभ, मोह, अहंकार, चाहतें आदि वृत्तियाँ आत्मा में लीन होकर अपना अस्तित्व खो देती है और एक राधा रूपी आत्म-शक्ति ही रह जाती है, जो सारे भ्रम को मिटाकर परमशक्ति में लीन कर देती है।

Purnahuti Yajna (Ved Mas) 28.08.17

Beejai Sham, P.B.H., Secrétaire Aryan Senior Citizen
Riv. du Rempart

Ce fut des moments de grande joie de voir une belle foule réunie à Triangle Arya Samaj pour assister à Purnahuti Yajna. Des chansons dévotionnelles interprétées par Acharya Sudesh Badree furent simplement merveilleuses. Tandis que l'intervention d'Acharya Jeetendra Purusharthi fut sublime Il a mis l'accent sur l'homme et ce qu'il consomme au quotidien pour son bien être spirituel et physique. Puis ses démonstrations des postures de Yoga furent chaudement applaudies. Quoi de mieux pour garder une personne équilibrée.

L'intervention du Dr O.N. Gangoo, le sympathique Président de l'Arya Sabha Mauritius était un brillant exposé sur le bon usage de la bouche, les yeux et les oreilles pour une vie épanouie.

Deux choses qui ont retenu l'attention : (1) Acharya Jeetendra Purusharthi n'a pas eu à se rendre chez un médecin à partir 1985 à ce jour ; et (2) Dr O.N Gangoo, travaille 15 heures par jour.

Un grand merci à ceux engagés dans cet évènement.

Honesty & Sincerity of Purpose

Sookraj Bissessur, B.A. Hons.

"He who always thinks and judges for himself, who is ever ready to accept truth and reject -falsehood, who puts down the unjust but patronises the just, who has as much regard for the happiness of others as his own. I do call – Just." *Maharshi Dayanand Saraswati.*

Who would not like the good reputation of 'being a straightforward, honest and frank person? But for a lot of us, such truthfulness does not come naturally. From the time we grow old enough to realize that others are not always pleased by 'unvarnished truth'. We are immensely tempted to bend the facts, omit information and errors or just speak outright lies to protect ourselves.

Honesty is more telling the entire truth and facing the consequences beyond our control which we would prefer to avoid. It is a basic attitude, revealing a lot about our respect for ourselves and for others as well. When we, adults do not deliver the proverbial *"An Honest Day's Work For An Honest Day's Pay"*, children do notice with rapt attention and tension.

J. Bennett, a famous writer rightly emphasized: "Every social, commercial, be it political as well, every human enterprise requiring people to act in concert, is always impeded when people are not honest with one another, with the dealing, feeling and healing". Various authors and philosophers have, across the ages, submitted several good and rational reasons to always be truthful; to tell the truth and only truth.

Telling truth leaves no room for misunderstanding and conflicts. We usually get into less trouble if we tell the truth in the first place; people simply trust us and we earn the enviable reputation for being truthful. It also helps us to be in harmony with our conscience and enjoy inner peace. We must always encourage one and all - elderly, young as well as children to commit themselves to be truthful. Thinking about the consequences of dishonest answers or explanations will fortify our spirit: we shall always shun exaggerated, sarcastic and sardonic language; never twist and turn truth or omit / leave out part of it.

How do we react to situations such as pickpocketing or shoplifting? More often we 'wait to see the consequences!' In this context silence equals to complicity!

The precious words of the founder of the Arya Samaj, Maharshi Dayanand Saraswati are inspiring: the first 'Guru' or teacher is the mother, then the father and teachers at schools, etc. It includes all those through whose teachings and actions lead the mind to be grounded in truth and weaned from falsehood.

Self-analysis provides the answers to "How far are we honest and sincere in purpose? That process starts now!!